गोविन्दाष्टकम्

Govindashtakam – संस्कृत, हिंदी अर्थ सहित

॥ अथ श्रीगोविन्दाष्टकम् ॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्राङ्गणरिङ्खणलोलमनायासं परमायासम् ।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारं
क्ष्मामानाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥१ ॥

अर्थ: जो सत्य, ज्ञान और अनंत स्वरूप हैं, नित्य हैं; आकाश आदि की सीमाओं से परे होकर भी जो स्वयं परम आकाश (चेतना का आकाश) हैं; जो गोकुल के आँगन में घुटनों के बल चलने को उत्सुक रहते थे; जो स्वयं हर परिश्रम से परे होकर भी लीला में परिश्रम करते दिखते हैं; जो माया से अनेक रूपों में दिखते हैं, स्वयं निराकार होकर भी पूरे संसार के रूप में हैं; जो पृथ्वी और लक्ष्मी के स्वामी हैं और जिनका कोई स्वामी नहीं, उन परमानंद स्वरूप गोविंद को प्रणाम करो।

मृत्स्नामत्सीहेति यशोदाताडनशैशवसन्त्रासं
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम् ।
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकं
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥२ ॥

अर्थ: 'तूने मिट्टी खाई है' कहकर जब यशोदा माँ ने डाँटा, तो जो एक छोटे बालक की तरह डर गए; और जिनके खुले मुख में माँ ने लोकालोक पर्वत सहित चौदहों भुवन देख लिए; जो तीनों लोकों रूपी नगर के मूल स्तंभ हैं, सारे लोकों को प्रकाश देते हैं पर स्वयं किसी प्रकाश पर निर्भर नहीं; उन सब लोकों के स्वामी, परमेश्वर, परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

त्रैविष्टपरिपुवीरघ्नं क्षितिभारघ्नं भवरोगघ्नं
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम् ।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभासं
शैवं केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥३ ॥

अर्थ: जो देवताओं के शत्रु असुर-वीरों का नाश करने वाले, पृथ्वी का भार उतारने वाले और जन्म-मरण रूपी संसार-रोग को मिटाने वाले हैं; जो स्वयं मोक्ष स्वरूप हैं; जो माखन खाते हैं, फिर भी भोजन की आवश्यकता से परे हैं और प्रलय में पूरे जगत को अपने भीतर समेट लेते हैं; जो निर्मल मन में विशेष रूप से प्रकट होते हैं पर स्वयं हर आभास से परे हैं; उन मंगलमय, पूर्ण शांत, परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलनगोवर्धनधृतिलीलालालितगोपालम् ।
गोभिर्निगदितगोविन्दस्फुटनामानं बहुनामानं
गोपीगोचरदूरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥४ ॥

अर्थ: जो गौओं के पालक गोपाल हैं; जो प्रभु होकर भी लीला के लिए गोप-बालक का रूप लेकर आए और गोप-कुल के रक्षक बने; जिन्होंने गोपियों के साथ खेलकर और गोवर्धन पर्वत उठाकर गोपों को प्यार और सुरक्षा दी; जिनका 'गोविंद' नाम गौएँ भी पुकारती हैं और जिनके अनेक नाम हैं; जो गोपियों के इतने निकट होकर भी इंद्रियों और बुद्धि की पहुँच से परे हैं; उन परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

गोपीमण्डलगोष्ठीभेदं भेदावस्थमभेदाभं
शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्यं चिन्तितसद्भावं
चिन्तामणिमहिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥५ ॥

अर्थ: जो गोपियों के मंडल में हर गोपी के साथ अलग-अलग दिखाई देते हैं, अनेक रूपों में रहते हुए भी एक ही हैं; गायों के खुरों से उड़ी धूल से धूसर होना ही जिनकी शोभा है; जो श्रद्धा और भक्ति से पकड़ में आते हैं और आनंद देते हैं; जो मन से सोचे नहीं जा सकते, फिर भी प्रेम से स्मरण करने पर हृदय में प्रकट हो जाते हैं; जिनकी महिमा मनचाहा फल देने वाली चिंतामणि जैसी है, उन परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं
व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षन्तं ताः ।
निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरन्तःस्थं
सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥६ ॥

अर्थ: यमुना में स्नान में मग्न गोपियों के वस्त्र उठाकर जो वृक्ष पर चढ़ गए, और जब गोपियाँ अपने वस्त्र वापस चाहने लगीं तो उन्हें लौटाने के लिए अपने पास बुलाने लगे (चीरहरण लीला); जो शोक और मोह दोनों से पूरी तरह मुक्त हैं; जो स्वयं ज्ञान स्वरूप हैं और हर बुद्धि के भीतर बसे हैं; जिनका शरीर केवल शुद्ध अस्तित्व (सत्ता) है, उन परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

कान्तं कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभासं
कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्तं मुहुरत्यन्तम् ।
कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नं
कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥७ ॥

अर्थ: जो अत्यंत सुंदर हैं, सब कारणों के भी कारण हैं, सबके आदि होकर भी स्वयं अनादि हैं, और जिनकी कांति काले बादल जैसी है; जो यमुना में रहने वाले कालिय नाग के फनों पर बार-बार सुंदर नृत्य करते रहे; जो स्वयं काल हैं, फिर भी काल की हर गिनती से परे हैं; जो सब कुछ जानते हैं, कलियुग के दोषों का नाश करते हैं और भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों की गति के कारण हैं; उन परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

वृन्दावनभुवि वृन्दारकगणवृन्दाराध्यं वन्देऽहं
कुन्दाभामलमन्दस्मेरसुधानन्दं सुहृदानन्दम् ।
वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्वं
वन्द्याशेषगुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥८॥

अर्थ: वृंदावन की भूमि पर देवताओं के समूह जिनकी आराधना करते हैं, उन गोविंद की मैं वंदना करता हूँ; जिनकी कुंद के फूल जैसी उजली, मधुर मुस्कान अमृत जैसा आनंद देती है और जो अपने प्रियजनों के आनंद हैं; जिनके आनंदमय दोनों चरण सभी पूजनीय महामुनियों के मन में पूजे जाते हैं; जो वंदना योग्य सभी गुणों के सागर हैं, उन परमानंद गोविंद को प्रणाम करो।

गोविन्दाष्टकमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यो
गोविन्दाच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ।
गोविन्दाङ्घ्रिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताघो
गोविन्दं परमानन्दामृतमन्तःस्थं स तमभ्येति ॥९॥

अर्थ: (फलश्रुति) जो भक्त अपना मन गोविंद को सौंपकर इस गोविंदाष्टक का पाठ करता है और 'हे गोविंद, अच्युत, माधव, विष्णु, गोकुलनायक, कृष्ण' इस प्रकार नाम लेता है, गोविंद के चरण-कमलों के ध्यान रूपी अमृत-जल से जिसके सारे पाप धुल जाते हैं, वह अपने ही भीतर बसे परमानंद-अमृत स्वरूप गोविंद को प्राप्त कर लेता है।

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीगोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

chalisa-pdf.com

Govindashtakam Lyrics in English

Satyam jnanam-anantam nityam-anakasham paramakasham
Goshtha-prangana-rinkhana-lolam-anayasam paramayasam
Maya-kalpita-nanakaram-anakaram bhuvanakaram
Kshmama-natham-anatham pranamata govindam paramanandam ||1||

Mritsnam-atsiheti yashoda-tadana-shaishava-santrasam
Vyadita-vaktralokita-lokaloka-chaturdasha-lokalim
Lokatraya-pura-mula-stambham lokalokam-analokam
Lokesham paramesham pranamata govindam paramanandam ||2||

Traivishtapa-ripu-viraghnam kshiti-bharaghnam bhava-rogaghnam
Kaivalyam navanitaharam-anaharam bhuvanaharam
Vaimalya-sphuta-cheto-vritti-visheshabhasam-anabhasam
Shaivam kevala-shantam pranamata govindam paramanandam ||3||

Gopalam prabhu-lila-vigraha-gopalam kula-gopalam
Gopi-khelana-govardhana-dhriti-lila-lalita-gopalam
Gobhir-nigadita-govinda-sphuta-namanam bahu-namanam
Gopi-gochara-duram pranamata govindam paramanandam ||4||

Gopi-mandala-goshthi-bhedam bhedavastham-abhedabham
Shashvad-go-khura-nirdhutodgata-dhuli-dhusara-saubhagyam
Shraddha-bhakti-grihitanandam-achintyam chintita-sadbhavam
Chintamani-mahimanam pranamata govindam paramanandam ||5||

Snana-vyakula-yoshid-vastram-upadayagam-uparudham
Vyaditsantir-atha digvastra datum-upakarshantam tah
Nirdhuta-dvaya-shoka-vimoham buddham buddher-antahstham
Sattamatra-shariram pranamata govindam paramanandam ||6||

Kantam karana-karanam-adim-anadim kala-ghanabhasam
Kalindi-gata-kaliya-shirasi sunrityantam muhur-atyantam
Kalam kala-kalatitam kalitashesham kali-doshaghnam
Kala-traya-gati-hetum pranamata govindam paramanandam ||7||

Vrindavana-bhuvi vrindaraka-gana-vrindaradhyam vande'ham
Kundabhamala-manda-smera-sudhanandam suhridanandam
Vandyashesha-mahamuni-manasa-vandyananda-pada-dvandvam
Vandyashesha-gunabdhim pranamata govindam paramanandam ||8||

Govindashtakam-etad-adhite govindarpita-cheta yo
Govindachyuta madhava vishno gokula-nayaka krishneti

chalisa-pdf.com

Govindanghri-saroja-dhyana-sudha-jala-dhauta-samastagho
Govindam paramanandamritam-antahstham sa tam-abhyeti ||9||

और भी चालीसा, आरती व स्तोत्र PDF के लिए देखें: www.chalisa-pdf.com

chalisa-pdf.com